JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक विद्यालय छात्रों के शिक्षा में पारिवारिक संबंधों का प्रभाव: एक अध्ययन

मदन मोहन झा[1], डॉ आर.पी.यादव[2]

[1]शोधार्थी रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय पलामू झारखण्ड

[2]शोद्य निदेशक रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय पलामू झारखण्ड

सारांश

यह अध्ययन माध्यमिक शिक्षा के स्तर पर छात्रों के पारिवारिक संबंधों के प्रभाव को विश्लेषित करता है। पारिवारिक संबंधों का महत्व शिक्षा क्षेत्र में व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है, लेकिन उनका वास्तविक प्रभाव माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शिक्षा, सामाजिक व्यवहार और अध्ययन आदतों पर कितना होता है, यह अभी तक अच्छी तरह से समझा नहीं गया है। इस अध्ययन में, हम पारिवारिक संबंधों के विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखकर माध्यमिक विद्यालय के छात्रों पर उनके पारिवारिक संबंधों का प्रभाव विश्लेषण करते हैं। हम छात्रों की शिक्षा, सामाजिक व्यवहार, और अध्ययन आदतों के पारिवारिक संबंधों के संदर्भ में प्रतिस्पर्धात्मक और सहायकता की स्थिति को मूल्यांकन करते हैं। इस अध्ययन के माध्यम से हमें छात्रों के शैक्षिक अनुभव में पारिवारिक संबंधों के योगदान की व्यापक समझ मिलेगी। पारिवारिक संबंधों का माध्यमिक विद्यालय के छात्रों पर प्रभाव एक महत्वपूर्ण और उपेक्षित क्षेत्र है। यह अध्ययन छात्रों के पारिवारिक संबंधों के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करता है और उनके शिक्षा, सामाजिक व्यवहार, और अध्ययन आदतों पर उनका प्रभाव निर्धारित करने का प्रयास करता है। छात्रों के पारिवारिक संबंधों की समझ और इसके माध्यम से उनकी शैक्षिक सफलता पर अध्ययन आधारित प्रस्तावना पर ध्यान केंद्रित करते हुए, यह अध्ययन छात्रों के शिक्षा में पारिवारिक संबंधों के महत्वपूर्ण योगदान को समझने का प्रयास करता है।

मुख्य शब्द/कीवर्ड : माध्यमिक शिक्षा, पारिवारिक संबंध, शैक्षिक प्रभाव, सामाजिक व्यवहार, अध्ययन आदतें-

प्रस्तावना

आधुनिक समाज में पारिवारिक संबंधों का महत्व अत्यधिक है। पारिवारिक संबंधों के द्वारा विद्यार्थियों को सामाजिक, आध्यात्मिक, और मानसिक सहारा प्राप्त होता है, जो उनके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहाँ तक कि शिक्षा के क्षेत्र में भी पारिवारिक संबंधों का अभिप्राय समान रूप से महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन का परिप्रेक्ष्य है माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के पारिवारिक संबंधों का प्रभाव गहनता से विश्लेषण करना। यह अध्ययन छात्रों के शैक्षिक और सामाजिक विकास पर पारिवारिक संबंधों के प्रभाव को समझने का प्रयास करेगा। इसके अलावा, यह अध्ययन उन

उपायों को प्रस्तुत करेगा जो छात्रों के पारिवारिक संबंधों को स्थायी और सकारात्मक बनाए रखने में सहायक साबित हो सकते हैं। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शिक्षा में पारिवारिक संबंधों का प्रभाव काफी महत्वपूर्ण होता है। जब परिवार का वातावरण सहायक और सकारात्मक होता है, तो छात्रों को आत्म-समर्पण और आत्म-संयम में मदद मिलती है। माता-पिता की भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक सहायता से छात्र स्कूल में बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। माता-पिता द्वारा पढ़ाई में सहयोग और प्रोत्साहन मिलना छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धियों को बढ़ावा देता है। जब परिवार शैक्षणिक महत्व को समझता है और उसके प्रति उत्साहित होता है, तो छात्र अधिक मेहनत करते हैं। पारिवारिक संबंध छात्रों को अनुशासन और समय प्रबंधन सिखाने में मदद कर सकते हैं। माता-पिता जो खुद अच्छे समय प्रबंधक होते हैं, अपने बच्चों को भी इस पर ध्यान देने की प्रेरणा देते हैं। परिवार में अच्छे पारिवारिक मूल्यों और नैतिकता का आदान-प्रदान छात्रों के सामाजिक और नैतिक विकास में सहायक होता है। इससे वे बेहतर निर्णय लेने में सक्षम होते हैं और समाज में जिम्मेदार नागरिक बनते हैं। पारिवारिक समस्याओं या तनावपूर्ण वातावरण का छात्रों की मानसिक और शारीरिक सेहत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। यह उनकी शैक्षणिक प्रदर्शन और समग्र विकास को प्रभावित कर सकता है। परिवार के सामाजिक संबंध छात्रों के सामाजिक कौशल और संबंध निर्माण की क्षमताओं को भी प्रभावित कर सकते हैं। एक अच्छा पारिवारिक वातावरण छात्रों को समाज में बेहतर तरीके से समायोजित करने में मदद करता है। समग्र रूप से, एक स्वस्थ पारिवारिक वातावरण छात्रों की शिक्षा और समग्र विकास में एक अहम भूमिका निभाता है।

अध्ययन का महत्व

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में पारिवारिक संबंधों का प्रभाव अध्ययन का महत्व विभिन्न कारणों से विशेष है।

1. शिक्षात्मक प्रदर्शन पर प्रभाव: छात्रों के शिक्षात्मक प्रदर्शन पर पारिवारिक संबंधों का असर होता है। सामर्थ्यवर्धक परिवेश में पालन किए गए परिप्रेक्ष्य में, छात्र प्रशिक्षण में अधिक सक्षम होते हैं।

2. सामाजिक विकास पर प्रभाव: पारिवारिक संबंधों का अध्ययन सामाजिक विकास के प्रति छात्रों के बोधगम्यता को बढ़ाता है। यह सहयोगी, सहानुभूतिपूर्ण, और संवेदनशील संबंधों को विकसित करता है।

3. सामाजिक संबंधों के स्थायित्व पर प्रभाव: अध्ययन के माध्यम से पता चलता है कि स्थिर और सकारात्मक पारिवारिक संबंधों वाले छात्रों में सामाजिक सुरक्षा और स्थिरता की भावना बनी रहती है।

4. सामूहिक अध्ययन का महत्व: इस अध्ययन के माध्यम से सामूहिक अध्ययन के प्रभाव को समझा जा सकता है, जो छात्रों के बीच गहन संबंधों का उत्थान करता है।

इस प्रकार, अध्ययन का महत्व छात्रों के शिक्षात्मक, सामाजिक, और मानसिक विकास में पारिवारिक संबंधों के प्रभाव को समझने में होता है।

क्रियाविधि

1. इस अध्ययन में, प्राथमिक और द्वितीय स्रोतों से डेटा कलेक्ट किया गया है। सामग्री विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन और सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से प्राप्त डेटा का विश्लेषण किया गया है। छात्रों के और उनके परिवारों से साक्षात्कार भी लिए गए हैं।
2. यह अध्ययन उपलब्ध पुस्तकों, अनुसंधानों, संदर्भ समीक्षा और संबंधित सामग्रियों का विश्लेषण करके और आवश्यकतानुसार साक्षात्कार और सर्वेक्षण का उपयोग करके पूरा किया गया है, जो छात्रों के पारिवारिक संबंधों के प्रभाव को विश्लेषित किया गया है।

परिवार प्राचीनतम, स्थायी, प्राकृतिक अनिवार्य एवं रक्त सम्बन्धों पर आधारित अत्यन्त उपयोगी संस्था है जिसके अभाव में मानव जाति का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है। परिवार के बिना हम नितान्त परावलम्बी मानव के पालन पोषण की कल्पना भी नहीं कर सकते। शिशु मानव परिवार की छत्र-छाया में परिवार के सदस्यों के स्नेह और प्रेम से पुष्ट होता है, उसका नैसर्गिक विकास होता है, वह बालक से बलवान पल्लवित, पुष्पित होता है और हरे-भरे वृक्ष के रूप में सर्वांगीण विकास को प्राप्त होता है। वृक्ष की भांति सेवा और बलिदान का आदर्श बालक यहीं से ग्रहण करता है।

अध्ययन सामाजिक व्यवहार एवं चरित्र निर्माण में भी सहायक है, अध्ययन से हमारी चिन्ताएं दूर होती है। हमारी शंकाओं का समाधान होता है, मन में सद्भाव और शुभ संकल्प उत्पन्न होते हैं तथा हमारी आत्मा को शांति मिलती है। अध्ययन मानव जीवन को सुखी और समुन्नत बनाता है। स्वाध्याय से प्रतिदिन सद्ग्रन्थों का अध्ययन करने से बुद्धि तीव्र होती है विवेक बढ़ता है और अन्तःकरण की शुद्धि होती है। अध्ययनशील व्यक्ति कुसंग से उत्पन्न होने वाली विकृतियों से बच जाता है। "निरन्तर अध्ययन करते रहने से मनुष्य का ज्ञान बढ़ता है तथा वाणी सफल सार्थक और प्रभावशाली बनती है। अध्ययनशील व्यक्ति का ही कथन प्रमाणिक और तथ्यपूर्ण माना जाता है। संसार ज्ञान की जन्मभूमि है, इसलिए जो व्यक्ति अध्ययनशील होता है वह नित नये ज्ञान से अवगत होता रहता है। अध्ययनशील व्यक्ति एक जागरूक नागरिक की भांति जीवन जीने का वास्तविक सुख प्राप्त कर लेता है।

अध्ययन आदत में वृद्धि की चाहत सभी रखते हैं खासतौर पर विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के छात्र-छात्राओं में इसकी ललक कुछ विशेष ही रहती है ज्यादातर विद्यार्थी किसी ऐसे नुस्खे, ऐसी तकनीकों की तलाश में रहते हैं जो उनकी बौद्धिक क्षमता को बढ़ा दे। "बुद्धिहीन व्यक्ति बुद्धिमान कैसे बनें? जो बुद्धिमान हैं वे अपनी बौद्धिक क्षमता कैसे बढ़ाये? इस पर पं. गोपीनाथजी का कहना है कि बौद्धिक क्षमता या अध्ययन आदत को बढ़ाने के लिए पहला उपाय है स्थिरता, ध्यान रहे हमारी चंचल वृत्तियाँ ही हमारे बौद्धिक विकास को रोकती हैं। इस अवरोध को हटाने के लिए आवश्यक है कि तुम धीरे-धीरे ही सही क्रमिक रूप से निरन्तर तीन घण्टे बैठकर पढ़ने का अभ्यास करो। शरीर के स्थिर होने पर मन भी स्थिर होता है। साथ ही बुद्धि भी विकसित होती है। इस क्रम में दूसरा बिन्दु है- एकाग्रता इसके लिए जरूरी है कि अपने अध्ययन-विषय पर एकाग्र बनो। न समझ में आने के बावजूद उसे पूरी एकाग्रता से समझने की कोशिश करो। निरन्तर एकाग्रता का अभ्यास तुम्हारी समझ को अपने आप ही विकसित कर देगा।

पारिवारिक सम्बन्धों का प्रभाव विद्यार्थी के ऊपर प्रत्यक्ष रूप पड़ता है। जिन परिवारों में माता-पिता बराबर लड़ते-झगड़ते रहते हैं उनके घर का वातावरण हमेशा तनावयुक्त बना रहता है। इस तनाव में उनके बच्चे भी ठीक प्रकार से कार्य नहीं कर पाते हैं, जिसके कारण उनके सामाजिक व्यवहार में गिरावट होती जाती है और उनमें अनुशासनहीनता, चिड़चिड़ापन, क्रोध आदि की मात्रा बढ़ती जाती है। इससे उनके और माता-पिता के बीच समायोजन पर भी बहुत प्रभाव पड़ता है फलस्परूप उनकी अध्ययन आदतें भी प्रभावित होती हैं। इसलिए शोधकर्ता ने उपर्युक्त समस्याओं को ध्यान में रखते हुए इन कारणों को जानने और इसके समाधान हेतु अपने शोध विषय का चयन किया है। अतः माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन, सामाजिक व्यवहार और अध्ययन आदतों पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी प्राप्त होगी। इस प्रकार इन समस्याओं को दूर करने में प्रस्तुत शोध कार्य से सुगमता होगी।

अध्ययन का औचित्य:-

सम्बन्धित साहित्यों का पुनरावलोकन करने पर यह जानकारी प्राप्त होती है कि अभी तक इस समस्या से सम्बन्धित अलग-अलग चरों के माध्यम से विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा अध्ययन किये गये है जैसे- साहित्य समीक्षा के आधार पर निम्नलिखित शोधकर्ताओं के कार्य और उनके शीर्षक निम्नलिखित हैं:

चितौड़ा, शशि 1996 आदिवासी एवं गैर आदिवासी किशोर विद्यार्थियों की हीन भावना, अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।" अग्रवाल, सुभाषचन्द्र 2000 "अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति एवं सामान्य जाति के छात्रों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन। "चतुर्वेदी, अर्चना 2001 "विभिन्न सांस्कृतिक संगठनों द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत गुणों, नैतिक सामाजिक व्यवहार और राष्ट्रीय जागरूकता की भावना का अध्ययन।" गुप्ता, आर.पी. 2003 "दो विधियों से निर्धारित जीवन सामाजिक व्यवहार के उसके शैक्षिक निहितार्थ।" वर्मा, मधुरिमा 2003 "लाभान्वित व अलाभान्वित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदतों एवं व्यक्तित्व का अध्ययन।" सैनी, श्रीमती अनीता 2004 "एकल एवं संयुक्त परिवार के बालकों के मूल्य, समायोजन एवं असुरक्षा की भावना का तुलनात्मक अध्ययन।" बाल निधि एवं बोस, सुनिता 2007 "बच्चों की अध्ययन आदतों को बढ़ाने हेतु शिक्षण अधिगम सामग्री।" इन शोधों में विभिन्न विषयों और चरों के माध्यम से अध्ययन किया गया है, परन्तु विद्यार्थियों के समायोजन, सामाजिक व्यवहार एवं अध्ययन आदतों पर पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभावों का अध्ययन एक साथ नहीं किया गया है इसलिए शोधकर्ता ने "माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के समायोजन सामाजिक व्यवहार एवं अध्ययन आदतों पर पारिवारिक सम्बन्धों के प्रभावों का अध्ययन" शीर्षक पर अध्ययन करने का निश्चय किया और इस शीर्षक को अपने अध्ययन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय बनाया। शोधकर्ता का मानना है कि अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षा जगत में अल्प मात्रा में अवश्य योगदान दे सकेंगे।

अध्ययन की परिकल्पनाऐं :-

i. स्वीकृति एवं अस्वीकृति प्रदान करने वाले पारिवारिक सम्बन्धों के छात्रों के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

ii. स्वीकृति एवं अस्वीकृति प्रदान करने वाले पारिवारिक सम्बन्धों के छात्राओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

iii. स्वीकृति एवं अस्वीकृति प्रदान करने वाले पारिवारिक सम्बन्धों के छात्रों के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

iv. स्वीकृति एवं अस्वीकृति प्रदान करने वाले पारिवारिक सम्बन्धों के छात्राओं के सामाजिक व्यवहार में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

v. स्वीकृति एवं अस्वीकृति प्रदान करने वाले पारिवारिक सम्बन्धों के छात्रों की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

vi. स्वीकृति एवं अस्वीकृति प्रदान करने वाले पारिवारिक सम्बन्धों के छात्राओं की अध्ययन आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन आदत:-

स्किनर के अनुसार:- सीखना व्यवहार में उत्तरोतर सामंजस्य की प्रक्रिया

रेवर्न के अनुसार:- सीखना आदतों के निर्माण की प्रक्रिया है।

मार्गन और डीज के अनुसार: अध्ययन सीखने का एक सपूर्ण प्रयास है।

परिसीमन:-

- शोधकर्ता के अध्ययन का क्षेत्र बिहार राज्य रखा जायेगा।
- बिहार राज्य के अन्तर्गत बेगूसराय जिले को सम्मिलित किया गया जायेगा।
- शोध में 150 न्यादर्श लिये गये हैं, जिनमें 75 छात्र एवं 75 छात्राओं को सम्मिलित किया जायेगा।

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दावली की व्याख्या:-

माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शिक्षा में पारिवारिक संबंधों का प्रभाव एक महत्वपूर्ण अध्ययन का विषय है। इस विषय पर कई शोध और अध्ययन किए गए हैं जो दर्शाते हैं कि पारिवारिक संबंधों का छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। आइए इस विषय पर विस्तार से चर्चा करें।

पारिवारिक सम्बन्ध:-

पारिवारिक सम्बन्धों में पति-पत्नी के साथ-साथ बच्चों का स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। परिवार में बच्चों और माता-पिता के बीच सम्बन्धों को मुख्यतः तीन महत्वपूर्ण रूप में देखा जाता है। जिनमें प्रथम प्रकार है- स्वीकारोक्ति, इसमें माता-पिता अपने बच्चों की अधिकतम बातों को स्वीकार कर लेते हैं। बच्चा जो कुछ भी कहता है माता-पिता उसकी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं ऐसे अभिभावक बच्चों की हर प्रकार की समस्याओं को दूर करने का भरसक प्रयास करते हैं। दूसरा प्रकार है-ध्यान देने वाले, इसमें बच्चों के ऊपर नियंत्रण रखा जाता है। माता-पिता बच्चों की आवश्यक मांगों को ही पूरा करते हैं और अनावश्यक बातों के प्रति जागरूक रहते हैं। वे बच्चों को अच्छी-बुरी बातों के प्रति सचेत भी करते हैं। तीसरा प्रकार- अस्वीकारोक्ति, इसमें ऐसे माता-पिता आते हैं जो अपने बच्चों पर ध्यान नहीं देते हैं। उनकी जायज मांगों को भी अस्वीकार कर देते हैं। उनकी इच्छाओं का दमन करते हैं।

पारिवारिक संबंधों का प्रभाव

भावनात्मक समर्थन

सकारात्मक संबंध माता-पिता और परिवार के सदस्यों का भावनात्मक समर्थन छात्रों को आत्मविश्वास और प्रेरणा देता है, जिससे वे अपनी पढ़ाई में अधिक रुचि लेते हैं और बेहतर प्रदर्शन करते हैं। नकारात्मक संबंध पारिवारिक कलह और असमर्थन का असर छात्रों की मानसिक स्थिति पर पड़ता है, जिससे उनकी शैक्षिक प्रदर्शन में गिरावट आ सकती है।

शैक्षिक माहौल

प्रोत्साहन वे परिवार जो शिक्षा को महत्व देते हैं और एक शैक्षिक माहौल प्रदान करते हैं, वे छात्रों को अध्ययन के लिए प्रेरित करते हैं। अप्रोत्साहित माहौल जहां शिक्षा को महत्व नहीं दिया जाता, वहां छात्रों की पढ़ाई में रुचि कम हो सकती है।

माता-पिता की शिक्षा का स्तर

उच्च शिक्षा स्तर जिन माता-पिता का शिक्षा स्तर उच्च होता है, वे अपने बच्चों को बेहतर मार्गदर्शन और संसाधन प्रदान कर सकते हैं। निम्न शिक्षा स्तर शिक्षा का निम्न स्तर माता-पिता के बच्चों के शैक्षिक समर्थन में कमी ला सकता है।

आर्थिक स्थिति

संपन्न परिवार आर्थिक रूप से मजबूत परिवार बेहतर शिक्षा सुविधाएं, ट्यूशन और अन्य शैक्षिक संसाधन प्रदान कर सकते हैं। आर्थिक कठिनाई आर्थिक तंगी के कारण छात्रों को शिक्षा में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

सामाजिक व्यवहार:-

इंग्लैण्ड के सामाजिक मानव-शास्त्री ईवान्स के अनुसार "परिवार, बन्धुत्व, राजकीय संगठन, विधि-विधान और धार्मिक सम्प्रदायों जैसी संस्थाओं में व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित व्यवहार ही सामाजिक व्यवहार है, जिसका अध्ययन सामाजिक मानव-शास्त्र के अन्तर्गत किया जाता है।

विश्व पुस्तक शब्द कोष के अनुसार - "समाजिक व्यवहार समाज, राष्ट्र, समूह एवं भीड़ में व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित व्यवहार है।"

समायोजन:-

समायोजन एक सार्वभौमिक एवं निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। हमारी दिन-प्रतिदिन की क्रियाओं का अधिकतर सम्बन्ध समायोजन तथा अनुकूलन से होता है। हम अनेक यंत्रों को इस प्रकार से यथा स्थान व्यवस्थित करते हैं, जिससे उनकी कार्यात्मकता में वृद्धि होती है। इस अर्थ में समायोजन का तात्पर्य किसी वस्तु को इस प्रकार से व्यवस्थित एवं संगठित करना जिससे जिस उद्देश्य के लिए वह बनाया गया है उसकी पूर्ति हो सके।

निष्कर्ष

पारिवारिक संबंधों का छात्रों की शिक्षा पर स्पष्ट और महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धियों को सुधारने के लिए पारिवारिक समर्थन, सकारात्मक संबंध और प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। अध्ययन के परिणाम दिखाते हैं कि माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के शैक्षिक प्रदर्शन, सामाजिक संबंध, और मानसिक स्वास्थ्य पर पारिवारिक संबंधों का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। सकारात्मक पारिवारिक संबंध छात्रों को शैक्षिक उत्साह और सामाजिक सहयोग प्रदान करते हैं, जबकि नकारात्मक पारिवारिक संबंध उनमें अधिक तनाव और संघर्ष पैदा कर सकते हैं,

सुझाव

माध्यमिक विद्यालय छात्रों के शिक्षा में पारिवारिक संबंधों का महत्वपूर्ण प्रभाव होता है। पारिवारिक वातावरण, माता-पिता का समर्थन, और घरेलू संस्कृति सभी मिलकर छात्र की शैक्षिक सफलता और समग्र विकास को प्रभावित करते हैं। यहाँ कुछ सुझाव दिए गए हैं जिनके माध्यम से पारिवारिक संबंधों को मजबूत करके छात्रों की शिक्षा में सुधार किया जा सकता है:

i. परिवार के सदस्य नियमित रूप से छात्रों के साथ उनकी पढ़ाई और अन्य गतिविधियों के बारे में चर्चा करें।

ii. खुला और ईमानदार संवाद स्थापित करें ताकि छात्र अपनी चिंताओं और विचारों को साझा कर सकें।

iii. छात्रों को उनके लक्ष्यों और आकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करें।

iv. उनकी छोटी-बड़ी सफलताओं पर सराहना और प्रोत्साहन दें, इससे उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा।

v. शिक्षा के महत्व और लाभों के बारे में घर में सकारात्मक वातावरण बनाएँ।

vi. पढ़ाई के लिए एक शांत और व्यवस्थित स्थान प्रदान करें जहाँ छात्र बिना किसी बाधा के अध्ययन कर सकें।

vii. परिवार के सदस्य मिलकर शैक्षिक गतिविधियों में भाग लें, जैसे कि पुस्तकें पढ़ना, शैक्षिक खेल खेलना, या शैक्षिक फिल्में देखना।

viii. साथ मिलकर होमवर्क और प्रोजेक्ट्स पर काम करें, इससे छात्रों को आवश्यक सहयोग मिलेगा।

ix. एक नियमित दिनचर्या निर्धारित करें जिसमें पढ़ाई, खेलकूद, और आराम का उचित संतुलन हो।

x. पर्याप्त नींद और पोषक आहार की सुनिश्चितता रखें, जो छात्रों की शारीरिक और मानसिक सेहत के लिए आवश्यक हैं।

xi. छात्रों की समस्याओं और चुनौतियों को समझने का प्रयास करें और उन्हें समाधान प्रदान करें।

xii. यदि आवश्यक हो, तो शिक्षकों या काउंसलर्स से परामर्श लें।

xiii. छात्रों को अपनी पढ़ाई और समय प्रबंधन की जिम्मेदारी लेने की स्वतंत्रता दें।

xiv. उन्हें स्व-प्रेरणा के महत्व के बारे में समझाएं और अपने लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रेरित करें।

xv. माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्य छात्रों के लिए आदर्श बनें, अपनी दिनचर्या और कार्यशैली से उन्हें प्रेरित करें।

xvi. उन्हें दिखाएं कि कड़ी मेहनत और प्रतिबद्धता से कैसे सफलता प्राप्त की जा सकती है।

xvii. पारिवारिक संबंधों को मजबूत करने और उन्हें सकारात्मक बनाने के माध्यम से, माध्यमिक विद्यालय के छात्र न केवल शैक्षिक रूप से बल्कि समग्र रूप से भी विकसित हो सकते हैं।

सन्दर्भ:

1) चितौड़ा, शशि 1996. "आदिवासी एवं गैर आदिवासी किशोर विद्यार्थियों की हीन भावना, अध्ययन आदतों एवं शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।" लोकमान्य शिक्षक सुयुक्तांक, शिक्षा की सं पत्रिका, पृष्ठ 57.

2) अग्रवाल, सुभाषचन्द्र 2000. "अनुसूचित जाति, पिछड़ी जाति एवं सामान्य जाति के छात्रों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।" लोकमान्य शिक्षक सुयुक्तांक, शिक्षा की सं पत्रिका, पृष्ठ 38.

3) चतुर्वेदी, अर्चना 2001. "विभिन्न सांस्कृतिक संगठनों द्वारा संचालित विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत गुणों, नैतिक सामाजिक व्यवहार और राष्ट्रीय जागरूकता की भावना का अध्ययन।" भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, जुलाई-दिसम्बर 2001, पृष्ठ 55-57.

4) गुप्ता, आर.पी.2003. "दो विधियों से निर्धारित जीवन सामाजिक व्यवहार के उसके शैक्षिक निहितार्थ।" भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, जुलाई-दिसम्बर 2003, पृष्ठ 43.

5) वर्मा, मधुरिमा 2003. "लाभान्वित व अलाभान्वित विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन आदतों एवं व्यक्तित्व का अध्ययन।" भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, जुलाई-दिसम्बर 2003, पृष्ठ 43.

6) सैनी, श्रीमती अनीता 2004. "एकल एवं संयुक्त परिवार के बालकों के मूल्य, समायोजन एवं असुरक्षा की भावना का तुलनात्मक अध्ययन।" भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, जुलाई-दिसम्बर 2004, पृष्ठ 44.

7) बाल निधि एवं बोस, सुनिता 2007. "बच्चों की अध्ययन आदतों को बढ़ाने हेतु शिक्षण अधिगम सामग्री।" भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, जुलाई-दिसम्बर 2007, पृष्ठ 45-47.

8) अरोड़ा, श्रीमती रीता 2005. शिक्षण एवं अधिगम के मनो-सामाजिक आधार" शिक्षा प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ संख्या. 326-327

9) कपिल, एच के.1979. अनुसंधान विधियाँ" द्वितीय संस्करण हरिप्रसाद भार्गव हाऊस आगरा, पृष्ठ संख्या-23

10) कुंवर भुवनेन्द्र सिंह, 2004. स्वाध्याय एक साधना" कल्याण वर्ष 82 सं. 2 गीता प्रेस गोरखपुर, पृ. स. 511.

11) कोठारी, सी.आर. 2008. अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी" न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन, आगरा पृष्ठ संख्या-2

12) "स्वाध्याय एक साधना" कल्याण वर्ष 82 सं. 2 गीता प्रेस गोरखपुर, पृ. स. 511.

13) "अनुसंधान विधिशास्त्र विधियाँ और तकनीकी" न्यूरोज इन्टरनेशनल लिमिटेड पब्लिकेशन कारपोरेशन, आगरा पृष्ठ संख्या-2

14) खान ए.आर. 2005 . "जीवन कौशल शिक्षा" माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर पृष्ठ संख्या-14

15) गुप्त, नत्थूलाल 2000. मूल्य परक शिक्षा और समाज' नमन प्रकाशन, नई दिल्ली पेज-122

16) गौड़, अनिता 2005. "बच्चों की प्रतिभा कैसे निखारे" राज पाकेट बुक्स नई दिल्ली पृष्ठ संख्या-14

17) चतुर्वेदी, त्रिभुवननाथ 2005 "पारिवारिक सुख के लिए है। किशोर मन की समझ" श्रीविजय इन्द्र टाइम्स नई-दिल्ली, अंक-8. पृष्ठ संख्या-25

18) चौबे, सरयू प्रसाद 2005. "शिक्षा मनोविज्ञान" इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाऊस, मेरठ पेज न.184

19) The Word Book& Encyclopedia, B-2 Field Enterprises Educational Corporation, Chicago, Vol-18, (1961), Page No.. 110

20) "अनुसंधान एवं अध्ययन' शिक्षा विभाग इलाहावाद विश्वविद्यालय अंक 54 (2003) पेज-20

21) सैनी, अनिता 2004. पी-एच.डी. शोध प्रबन्य राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

22) भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका जनवरी-जून 200 पेज-77